1854 में सरकार ने भारतीय सर्वेक्षण विभाग से पूछा कि महासर्वेक्षक के कार्यालय में स्थापित प्रेसों पर टिकटों को मुद्रित किया जा सकता है ।
22 फरवरी को इस काम को करने का निर्णय लिया गया। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मुख्य मानचित्रकार मारियानो स्मिथ ने ऐसा डाकटिकट तैयार किया था जिसमें रानी का मस्तक छाप हुआ था ।

तांबे की प्लेट पर डिजाइन की उचित नक्काशी श्री नमीरुद्दीन द्वारा और इसी से प्लेट स्थानांतरण प्राप्त किए गए थे।
डाक टिकटों की पहली छपाई एक दिन में डेढ़ लाख की संख्या में की गई और पेस में इन डाक टिकटों को छापने के लिए काम के घंटो को बढ़ाकर दोगुना कर दिया गया।

ऊपरी पंक्ति नीले और सिंदूरी रंग में मुद्रित टिकटों को प्रदर्शित करती है और आधिकारिक तौर पर जारी किए गए मूल तांबे से बने नमूने से पुन: उत्पादित रंगों के सटीक मिलान के बिना मर जाता है।

नीचे की दो निचली पंक्तियाँ मूल तांबे की प्लेटों व लिथोग्राफिक पत्थर से बने नमूने से पुनरुत्पादित प्रायोगिक डिजाइन को दिखाती हैं|

यह लिफाफा मेमेन सिंह में फरवरी 1856 को एलेकजेंडर व्हाट को भेजे गए एक लिफाफे की एक दोबारा से बनाई गई प्रति है।